योग सूत्र में समाधि की अवधारणा

Concept of Samadhi in Yoga Sutra

Dr. Ram Kishore

Assistant Professor (Yoga)

School of Health Sciences

CSJM University, Kanpur

समापत्ति

क्षीणवृत्तेरभिजातस्यव मणेर्ग्रहीतृग्रहणग्राह्मेषुतत्स्थतदञ्जनतासमापत्तिः।

योगसूत्र 1.41

जिसकी सभी बाह्य वृत्तियाँ क्षीणता को प्राप्त हो चुकी हैं, ऐसे स्फटिक मणि सदृश निर्मल चित्त का ग्रहीता (आत्मा–पुरुष), ग्रहण (अन्तःकरण और इन्द्रियाँ), ग्राह्य (पंचभूत एवं इनके विषय) में स्थित होना और तदाकार हो जाना ही सम्प्रज्ञात समाधि कहलाती है।

समापत्ति

तत्र शब्दार्थज्ञानविकल्पैः संकीर्णा सवितर्का समापत्तिः।

योगसूत्र 1.42

अर्थः— उनमें शब्द, अर्थ और ज्ञान के विविध विकल्पों (प्रकारों) से मिली हुई सवितर्क नामक समाधि है।

समाधि

तदेवार्थमात्रनिर्भासं स्वरूपशून्यमिव समाधिः।

योगसूत्र 3.3

अर्थः– जब (ध्यान में) मात्र ध्येय (लक्ष्य) की ही प्रतीत होती है, तथा चित्त का निज स्वरूप शून्य–सा हो जाता है, तब वही (ध्यान) समाधि हो जाता है।

समाधि

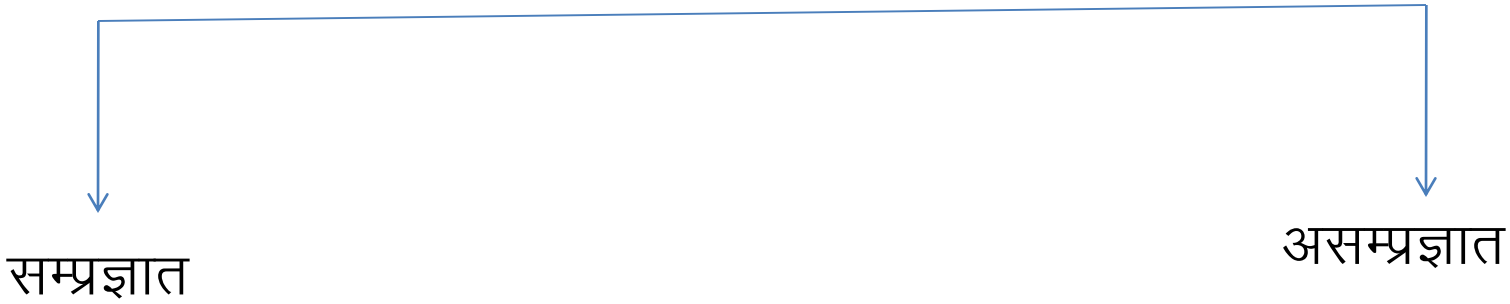

सम्प्रज्ञात समाधि के भेद

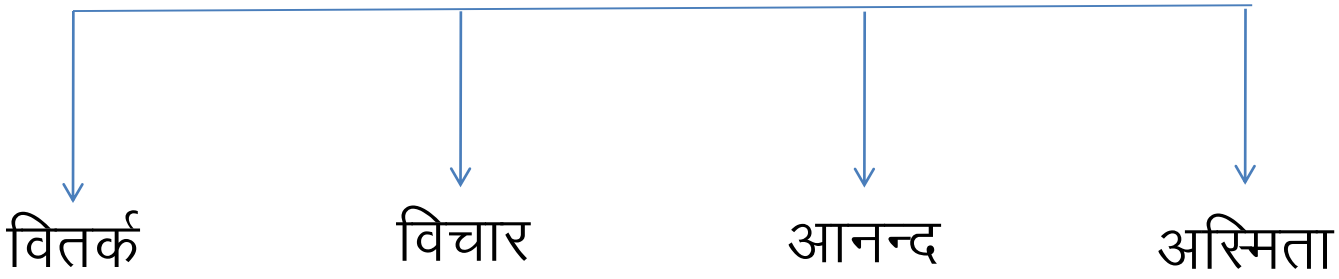

वितर्कविचारानन्दास्मितारुपानुगमात्सम्प्रज्ञातः।

योगसूत्र1.17

असम्प्रज्ञात समाधि

विरामप्रत्ययाभ्यासपूर्वः संस्कारशेषोऽन्यः।

योगसूत्र1.18

अर्थः– जिसकी पूर्व अवस्था विराम–प्रत्यय का अभ्यास है, तथा जिसमें चित्त की स्थिति मात्र संस्कार स्वरुप ही शेष बचती है, वह दूसरी अवस्था (असम्प्रज्ञात समाधि) है।

भवप्रत्यय समाधि

भवप्रत्ययोविदेहप्रकृतिलयानाम्।

योगसूत्र1.19

भव–प्रत्यय नामवाली (असम्प्रज्ञात समाधि) विदेह और प्रकृतिलय वाले योगियों की होती है।

उपाय प्रत्यय समाधि

श्रद्धावीर्यस्मृतिसमाधिप्रज्ञापूर्वक इतरेशाम्।

योगसूत्र 1.20

श्रद्धा, वीर्य, स्मृति, समाधि और प्रज्ञापूर्वक क्रम से अन्य साधकों को प्राप्त होती है।

धन्यवाद

Thanks